--- IMG\_7403.txt ---

[ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश  
  
है|  
  
उपदेश नं० एक  
  
पूज्यगणों और भ्राताओ ! ॥ |  
ड उस विश्वपति परम पिता को कोटिश: धन्यवाद है कि  
  
जिसने अपनी असीम दया से इतने व्यक्तियों को आज एक. ५  
ही समय में इस स्थान पर एकत्रित कर दिया है. | यदि हम  
  
़ सब एक-एक करके इस इकट्ठे होने के कारण पूछने लग.  
जाँय तो यह सम्भव है कि प्रत्येक की बात चीत का ढंग  
निराला हो- परन्तु गहरी दृष्टि से देखने पर पता चलेगा कि '  
उन सारे ही विचारों के भीतर एक ही सिद्धान्त अथवा एक ही /  
नियम कार्य कर रहा है | रा  
  
यह संसार परिवर्तनशील है इसमें परिवर्तन होने का  
  
नियम कुछ ऐसे लगातार सिलसिले से कायम है कि जिसमें  
प्रत्येक प्राणी जानता हुआ और न जानता हुआ बेवशी की |  
अवस्था में बँधा हुआ है। बढ़ाव-घटाव, लेना-देना, आना. ॥  
जाना इत्यादि इन्द्र उसके लक्षण हैं परन्तु साथ ही इनके |  
भीतर गुप्त र्त्प से और एक तीसरी वस्तु भी दृष्टिगोचर होती |  
है कि जिसको ठहराव कहते हैं चर होती |  
  
| प्रत्येक वस्तु

--- IMG\_7404.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ]  
२१  
इस प्रकार यह तीनों गुण व्रिगुणात्मक जगत में  
अपने गुणी क॑ आधार पर रहते हुए हर समय कार्य मे  
रहते हैं | सारांश यह है कि गुणों में परिवर्तन है करते  
गुणी कि जिसके परन्तु वह  
गुणी कि जिसके सहारे इन सबका संचालन होता है  
निरालम्ब और एकरस है | वही ' सत्‌” है । क्‍  
अशान्त, निर्धन और धनवान इ्यादि जा 3 इआ कक  
क्यो? इसका कारण इत्यादि जो दिखाई देता है ऐसा  
क्यों ; इसका कारण समझ लेना साधारण काम नहीं है |  
सुख में दुःख, रोग में मुक्ति और निर्धनता में धन इत्यादि गुप्त  
रूप से किस प्रकार छुपे रहते हैं जब हम इस पर विचारने  
लगते हैं तो बड़ी कठिनाई में पड़ जाते हैं | यह गुत्थी हमारे  
से जल्दी सुलझाने में नहीं आती । ऐसा क्‍यों होता ? इनका  
उत्तर केवल यही है कि हमारी दृष्टि अल्पज्ञ है हमारे तलाश  
करने का ढंग ठीक नहीं है और हमारे साधन गलत हैं ।  
यदि वास्तविक रीति से विचारा जाय तो आपको पता  
चलेगा कि दुःख-सुख का, अशान्ति-शान्ति का और  
रोग-नीरोगता का ही पिछला और अधोभाग है । अधिक हर्ष  
होने पर भी आँसू निकल आते हैं | इनमें एक सत्‌ है और  
दूसरा उसका साया और असत्‌ । सत्‌ में ठहराव है, आनन्द  
है और समता है असत्‌ में घटाव, फैलाव और सिमटाव है |  
जिस समय कोई वस्तु अपने असली सत्‌ रूप को त्याग कर  
इन घटाव और बढ़ाव इत्यादि के चक्कर में पड़ जाती है तभी  
उसमें इन्द्र और चंचलता उत्पन्न हो जाती है और जब किसी  
प्रकार फिर अपने में उसी सत्‌ रूप धारण कर लेती है तब  
उसको फिर से समता और आनन्द प्राप्त हों जाता है।

--- IMG\_7405.txt ---

[ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश  
  
बच्चा जब माता के गर्भ से बाहर आता है तब उसकी  
प्रकृति स्वाभाविक होती है | उसमें सचाई और सरलता होती  
है। वह हर समय आनन्दित रहना चाहता है परन्तु धीरे-धीरे  
माता-पिता, सुसाइटी और शिक्षा (तालीम) के प्रभाव से उसमें  
अवगुण और कमजोरियाँ उत्पन्न होने लगती हैं और वह  
अपने स्वाभाविक गुण सत्‌ से बहुत दूर जा पड़ता है |  
. बस उसी अपने स्वाभाविक गुण “समता” को प्राप्त  
करने के लिये मनुष्य को उद्योग करना पड़ता है |.  
क्रियायें सीखनी होती हैं और शिक्षालयों में जाना पड़ता है |  
इसी समता व सदाचार के लिये स्वाध्याय और सत्संग की  
आवश्यकता है | यदि इस सम्मेलन में पधारने की गरज  
आपकी यही है जैसा कि अभी मैंने बताया है तब तो मैं कह  
सकता हूँ कि आप सब लोग एक ही सिद्धान्त और एक ही  
आदर्श की ओर जा रहे हैं |  
मजहब वा धर्म.  
थोड़ी देर के लिये आप अपनी वर्तमान और गुजरी हुए  
अवस्था पर विचार करने का कष्ट उठायें | आपको मालूम है  
कि आप कहाँ थे आपकी क्‍या स्थिति थी ? इस प्रश्न के  
उत्तर मे हम यदि शास्त्रों की गहन फ़िलासफी को काम में  
लायें और उत्पत्ति, स्थिति और लय पर विचार करने लगेँ तो  
हममें से बहुत कम लोग ऐसे होंगे कि जो उसको पसंन्द करें  
और समझें | इसलिये यह उचित जान पड़ता है कि मोटे-मोटे  
दृष्टान्तों से सरल वार्ता के रूप में आपको समझायें । सुनिये-

--- IMG\_7406.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ]  
  
२३  
  
उलटा एक समय था कि जब शिशु (बच्चा) माता के उदर में  
उलटा लटका हुआ था, उसको एक झिल्ली चारों ओर से  
न डं था हद जाजन ० ने रस्सी बन कर उसको  
रुधिर उसको मिला करता था ये और मह बी  
था प्रकाश और वाय का अप | मल और मूत्र की दुर्गन्ध  
तथा प्रकाश और वायु का अभाव इत्यादि देख कर यही कहा  
जायगा कि वह एक ऐसी दुनियाँ में था कि जिसको साक्षात्‌  
नरक अथवा बन्दीगृह कहते हैं ।  
परन्तु एक समय वह आया कि जब उसने इस दुःखदायी  
गर्भावस्‍था को त्याग कर दृश्य जगत्‌ में अपना कदम रक्‍्खा  
और खुली हुई वायु में श्वॉसें लेने लगा। अब न वह अन्धकार  
है और न बन्धन | यहाँ उसको खूब हाथ पाँव हिलाने तथा  
आँखें खोलने का सुभीता है भोजन भी बदल गया है और खून  
के बदले दूध हो गया है | यह उसका परिवर्तन भी एक  
प्रकार की मृत्यु कही जा सकती है क्योंकि वह एक दुनियाँ  
से निकल कर दूसरी दुनियाँ में आया है | अथवा इसको एक  
ऐसा पलटा कह सकते हैं.कि जिसके द्वारा वह जीवन की  
एक अवस्था को पार कर दूसरे में प्रवेश हुआ है।  
इससे पहिले वह जीव तामसी और अन्धकारमय अवध  
में जकड़ा हुआ बन्दीगृह में पड़ा कष्ट झेल रहा था, तमोगुश  
बीजरूप से उसके अन्दर छिपा हुआ था, आज उसने दूं  
बनने के लिये कल्ला निकाला है, उसकी पत्तियां थोड़ी-थोड़ी  
हिलने लगी हैं और उसको फैलने और फूटने का मौका मिला  
है। यह तमोगुण की प्रथम अवस्था कहलाती है जो कि  
  
बट

--- IMG\_7407.txt ---

२४ [ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश  
  
स्वाभाविक ही जन्म से हर एक के साथ आया करती है ।  
तमोगुण गिराने वाली प्रकृति की एक धारा है यह  
हमेशा मनुष्य को बुराई और अज्ञानता की ओर ढकेलती  
रहती है, इसके चक्कर में पड़ जाने से प्राणी सत्‌ से बहुत  
दूर जा गिरता है अभी तक यह (तमोगुण) दबा हुंआ है परन्तु  
शरीर के विकास के साथ ही साथ बुद्धि व ज्ञान-विकास  
(फैलाव) भी होने लगता है उस समय तगोगुण क्षीण होने  
लगता है । कर  
जब तक मनुष्य पशुओं जैसी वृत्ति रखकर खाने पीने  
और सोने जागने और सुख-दुःख को ही सब कुछ समझता  
हो जैसा कि बच्चे समझते हैं तब तक उसके लिये यह कहा.  
जायेगा कि इसकी तमोगुणी अवस्था है |  
परन्तु यह तामसी अवस्था भी एक मुख्य समय तक  
: ठहराव उत्पन्न कर पलटा खाती है । और आगे उसमें जीवन  
की एक नवीन लहर उंत्पन्न होती है कि जिसके द्वारा मनुष्य  
ज्ञान की वृद्धि करता हुआ अपने कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य को  
समझने लगता है । यहाँ पर उस तामसी जीवन की मृत्यु हो  
यहाँ से इस अवस्था को तमोगुणी न कह कर-रजोगुणी  
कहेंगे। अब रजोगुणी का आरम्भ्,हुआ समझो-४ उर्दू जुबान  
में इस प्रथम तामसी अवस्था को /तब्ई”:और रजोगुणी' को  
“अखलाकी” कहते हैं | ७ 5 0 कफ बा बा  
  
॥

--- IMG\_7408.txt ---

30.3 22002. 37005 0080 ०४७४० ४४७४४७४७४७४७४७७४४५४४४७७४७७४७४४७४४७४४४४७४४४४४४४४४४ए४ शो  
  
हात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] २५  
  
| यहाँ से अखलाक वा सदाचार का आरम्भ होता है | इस  
  
स्थान पर उसको अपनी ब्रुटियाँ और कमजोरियाँ मालूम होने  
लगती हैं कि जिसके कारण उसको लज्जा आती है और  
  
| शोक होता है इसी कारण वह इस अवस्था से उन्नति के मार्ग  
  
की ओर चल पड़ता है |  
  
रजोगुण ही हमेशा आगे चलता है इसी के द्वारा हम  
उन्‍नति करते हैं इसमें चंचलता है, ठहराव नहीं है, आगे  
बढ़ना पीछे हटना इस प्रकार के सारे काम रजोगुणी के होते  
  
| हैं | रजोगुणी अवस्था में यह इच्छा रहती है कि उसको  
  
हमेशा सुख व आनन्द मिलता रहे, दुःख और अशान्ति उससे  
  
| दूर रहें, उसका जीवन उच्चकोटि का हो, उसके व्यवहार  
| ठीक हों, उसकी मानसिक इच्छाएँ सतोगुणी हों और उसका  
  
मन दैवी गुण धारण करने वाला बन जाये इत्यादि |.  
यद्यपि ऐसा मनुष्य अपने को बुरा भला कहता हुआ  
  
| इस बात का इच्छुक रहता है कि उसमें सम्पूर्णतः सद्‌गुण ही.  
  
आ जायें, उससे कोई बुरा व्यवहार न हो परन्तु यह बात  
उसके अधिकार से बाहर होती है । संचित और प्रारब्ध कर्म  
के धक्के उसको दुराचार करने की ओर झुका देते हैं, उसके  
पूर्व कर्मजनित संस्कार उभर आते हैं, वह उसको धक्का देते  
हैं उस समय वह गिर जाता है और पछिताता है। उसकी इस  
समय की दशा एक ऐसे निर्बल शिशु की भॉँति होती हैं जो  
गिरना नहीं चाहता परन्तु निर्बलता के कारण र्क भी नहीं  
सकता और अपने गिर पड़ने पर दु:खित क्षुभित) होता हैं।

--- IMG\_7409.txt ---

[ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश  
  
२६  
  
भन की यह व्यावहारिक दशा (स्थिति) है | जैव न य ऊब  
कर अपने भीतर सदगुणों को एकव्रित करना चाहता है परन्तु  
जब किसी प्रकार भी अपने कुसंस्कारों पर पूर्ण आधिपत्य नहीं  
पा सकता, तब उसके ऊपर अमृत भण्डार से एक अमृतमयी  
स्रोत की धार आने लगती है जिसको “आत्मबलः कहते हैं |  
और इसी का नाम “सतोगुण प्रधान” अवस्था है | उस समय  
मनुष्य को (मानसिक-दशा) वा मन शान्त होकर ध्रुव-पद की  
ओर बढ़ने लगता है | इस अवस्था में ईश्वर और जीव में  
भेदभाव नहीं रहता, एक दूसरे से मिलकर द्वैतभाव को मिटा  
देते हैं ।  
  
यह वह दशा है कि जब मन के सम्पूर्ण कुसंस्कार मिट.  
  
जाते हैं और उसमें सारे सदगुण आ जाते .हैं इस समय  
परमात्मा से उसकी इतनी गहरी प्रीति वा घनिष्टता हो जाती  
है कि बिना प्राप्त किये उसे चैन नहीं आता | इस अवस्था  
में वह ऊर्ध्वगामी होकर परमात्मा की ओर चल पड़ता है अतः  
. इसी जीवन में मृत्यु से पूर्व ही उसके अन्दर एक  
परिवर्तन हो जाता है और फिर इसी संसार में हि कि ना  
जगह) उसे स्वर्ग सुख प्राप्त होता है | वह इंकार (न दूसरी  
जाता है, ईश्वरीय प्रेम ही उस समय उसका है इश्वर की ओर  
जीवन दाता होता है | इस प्रकार वह मी धाओ और  
लेता है यहाँ तक मनुष्य की शारीरिक वह अमरत्व प्राप्त कर  
  
: “था मृत्यु सम्बन्धी कहानी पहुँचती तक और आत्मिक  
हु | परन्तु उत्पत्ति और  
  
लय (मृत्यु) के स्रोत का यही अन्त  
उत्पत्ति की अस्थिर दशायें हैँ । नहीं है सब मृत्यु और द

--- IMG\_7410.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ]  
  
२७  
  
अभी मनुष्य को नहीं  
कि नहीं मिली  
अवस्थाओं पर अधिकार प्राप्त नहीं कर सका इसका समय  
  
अब आने वाला है | यदि तामसिक और अवस्थाओं  
के प्रबल वेगों को सहन करता हुआ पार हो चुद हे  
सात्विक और आध्यात्मिक दशा प्राप्त हो चुकी हैं तो उस  
समय यह कहा जा सकता है कि अभी राजसिक दशा से  
छुटकारा मिला ।  
  
असली भण्डार अथवा ध्रुव-पद अभी दूर है वह उसकी  
दया और कृपा के बिना प्राप्त नहीं होता | विराट्‌-पुरुष की  
महेश-शक्ति ही प्राणियों को धक्के देती हुई स्थिरता और  
शान्ति के धामे में ले जाती है उस समय ही असली जीवत्व  
मिलता है और प्राणी मनुष्य संज्ञा में आता है ।  
  
यह स्थान प्राप्त होने तक मनुष्य ने अपने को तीन  
दशाओं में परिवर्तन किया है | पहली दशा में वह पत्थर और  
वनस्पति था, दूसरी अवस्था मैं पत्थर, वनस्पति पशु और  
किजिचिन्मात्र मनुष्य बना, तीसरी दशा में वह मनुष्य कि गया  
है परन्तु अभी पूर्ण पुरुष नहीं बना | इन तीन दशाओं में उसे  
मृत्यु का स्वाद चखना पड़ा है और नवीन जीवन ्क्‌ सुखदाई  
दशाओं में होकर जाना पड़ा है, अभी इसी जीवन में न न  
कितनी बार मृत्यु और जन्म होगा जब कहीं जाकर &  
पुरुषत्व प्राप्त हो सकेगा कि जिसको शास्त्रों ने मचुयल  
कहा है |  
  
पन्‍थ या मजहब  
  
पूर्व इसके कि.हम मण्डलों का वर्णन करें और तफसील

--- IMG\_7411.txt ---

न [ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश  
हु ३८  
  
(्यौरा) बयान करें यहें बात भी निश्चय कर लेना चाहिये कि  
  
व जाना है भला क्या ?  
यह उतार, चढ़ाव, ठहराव, एक साथ अत्यन्त ऊँचाई या  
सुनियेन यदि हम मा करें तो उस समय भय रहतां  
गहाराई में चले जाने का साहस करें से जावे और  
है कि कहीं हमारा श्वॉस इस परिश्रम से फूल करने का उपाय  
हमारा दम न घुटने लगे इस थकावट के दूर करने का कस  
हमारे पास यही होता है कि हम थोड़ा विश्राम ले लें और  
आराम पालें: ताकि आगे चलने के लिये पुरुषार्थ बना रहे।  
इस चलने थकने या आगे बढ़ने से इस वक्‍त तक तो है  
केवल इसी नतीजे पर पहुँच सके हैं कि अभी हम रास्ते में हैं  
यह बीच के मण्डल हमारे ठहरने, सुस्ताने और आगे बढ़ने के  
७४... मुकामात और पड़ाव हैं इसके सिवा और कुछ नहीं। आगे  
॥ फिर रास्ता है और चलचलाव है। राह में अपने आपको  
दरन्दों, चोरों और ठगों से बचाने और सर्दी, गर्मी और दूसरे  
कष्टों से महफूज रखने के लिये ऐसी युक्तियाँ (तदवीरें) करनी  
\* होती हैं कि जिससे रास्ता खोटा न हो जावे और ध्रुव-पद  
तक कभी पहुँच ही जावें। बस इन्हीं युक्तियों को कि जिनके  
॥ द्वारा वहाँ पहुँचते हैं “पन्थ, मार्ग और मजहब कहते हैं।  
  
सनातन  
  
मनुष्य में ब्रह्म की सम्पूर्ण शक्तियाँ आई हैं। जैसा कि  
कहा जाता है- ”पिण्डे सो ब्रह्माण्डे“ण। परन्तु भेद केवल  
इतना है कि वह सर्वज्ञ है और मनुष्य अल्पज्ञ | उसमें समष्टिता  
है और इसमें व्यष्टिता। वह असल है और यह माया. है।

--- IMG\_7412.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] रध  
  
परमात्मा ने अपनी अत्यन्त दया से एक और भी वस्तु इस  
मनुष्य को दी है वह और किसी देहघारी के पास नहीं है  
जिसको बुद्धि कहते हैं। इसका भाग मनुष्य में सबसे अधिक  
है और इसी के द्वारा वह अच्छे बुरे तथा अल्पज्ञता और  
सर्वज्षता को पहचान सकता है। इसी बुद्धि के साथ-साथ  
एक और भी चीज दी है कि जिसको "मन कहते हैं। यह मन  
गरुड़ है कि जिस पर सवारी करके हम सबसे ऊँचे स्थान  
ब्रह्म लोक में जायेंगे। चाहे कोई उस परमात्मा को माने या न  
माने, चाहे आस्तिक हो वा नास्तिक, यह चीजें सबको ही  
मिली हैं यही उसकी 'दयालुता' है कि जिसको उसने उत्पन्न  
होने से पूर्व हमारे लिये गर्भ में ही भेज दिया था। \_  
इसके पश्चात्‌ हमने अपनी दुनियाँ अपने आप बनाई  
है। जिस मन, बुद्धि और स्वभाव को हम साथ लाये थे उनको  
बदल डाला है | उनके गुणों को अवगुणों से तबदील कर  
दिया है इसी कारण दुःख पर दु:ख झेलते हुए हम मृत्यु रूपी  
कुएँ में गिरने लगे हैं। हमने अपने पाँव में अपने आप  
कुल्हाड़ी मारी है | साथ  
- परन्तु इस दशा में भी उसकी वही दया हमारा  
देती है। यदि हम थोड़ा-सा भी विचार शक्ति से काम लेते  
हुए अपने खोये हुए रास्ते को तलाश करने लगते हे हे तो  
हेंदय से पश्चाताप करते हुए उससे क्षमा प्रार्थी होते होती  
उस करुणा के अमृत-नद में फिर से एक लहर उत्ाा खड़ा  
है कि जो हमको ढकेलती हुई ठीक मार्ग पर लाका उ\*  
कर देती है और हम ठिकाने पर पहुँच जाते हैं।

--- IMG\_7413.txt ---

[ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश  
यह क्रम आदि से चला आया है इसलिये इसको  
“सनातन” कहते हैं और धर्म से तात्पर्य उस वस्तु से है.  
कि जिसको ग्रहण करके और उसके अनुसार चलने के लिये  
मजबूर हों यही 'सनातन-धर्म” कहलाता है।.... हि हि  
द धर्म के अर्थ हम और भी साफ किये देते हैं । जिन  
कार्यों से दूसरों को लाभ हो तथा अन्यों की शारीरिक  
सामाजिक और आत्मिक उन्नति हो उनको धर्म कहते हैं और  
जो उसके विरूद्ध हो जिसमें केवल अपना ही स्वार्थ सिद्ध हो ः  
वह कर्म अर्धम कहलाता है | हा  
यह संसार इन्द्र से बना है हर जगह दो हीं वस्तुयें स्तुयें  
दिखाई देती हैं जैसे परा-अपरा; दैव-दैत्य; समष्टि-व्यंष्टिं  
आना-जाना; बाहर-भीतर इत्यादि । जो कर्म इस इन्द्र  
छडा के आदर्श हर  
छुड़ा के आदर्श की ओर ले जाय वही- सनातन-घधर्म  
परन्तु आजकल का सनातन धर्म न सनातन धर्म हैं और  
आर्य-समाज | इसी प्रकार मुसलमान और दूसरे पंन्थाई और,  
और बौद्ध इत्यादि का हाल है । की , ईस  
आदि में मत-भेद क्‍  
हेर फेरसे उन में विषमता आ भमानावस्था में थे, पश्चात्‌ हि  
वास्तविकता का भी लोप हो « , शनैः शनै: इतना हार  
और समानता प्राप्त करन  
  
३०

--- IMG\_7414.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] ३  
१  
  
इनमें कमी- और आनन्द आत्मा का स्वाभाविक गुण है जब  
इनमें कमी-वेशी हो जाती है तभी वह अशान्त हो जाता है  
इनको ही “विकार” कहते हैं परन्तु कठिनता यह पड़ती है कि  
जितना-जितना वह इनकी प्राप्ति की चाहना करता है उतना  
इनसे दूर होता जाता है इसलिये वह दुःखी हो जाता है |  
वर्तमान अशान्त अवस्था को त्याग के शान्त और  
आनन्दमयी साम्यावस्था प्राप्त कर लेना ध्येय है | इसके लिये  
सबसे प्रथम कर्मकाण्ड की उत्पत्ति हुई, पहिले पहल वेदों के  
संहिता भाग ने कर्मकाण्ड की शिक्षा दी | जब-समाज कर्मकाण्ड .\_  
में जुट पड़ा, परन्तु आगे चलकर जब उसमें भी सफलता  
प्राप्त नहीं हुई तो ऋषियों ने कर्म को अज्ञान और अन्धकार  
का नाम देकर उपनिषदों की रचना की और उनको ज्ञानकाण्ड  
का नाम दिया । उपनिषदों ने भी ज्ञान के साथ कर्म और  
उपासना का उपदेश दिया था इसलिये वादरायण (व्यास)  
ऋषि ने ब्रह्मसूत्र नाम देकर ज्ञान का भाग ही अलग कर द  
दिया । इसी ब्रह्मसूत्र का दूसरा नाम वेदान्त सूत्र है जिसके  
रचयिता वेद व्यास कहे जाते हैं | श्री शंकराचार्य प्रथम और  
गौड़पादाचार्य पश्चात्‌ श्रीशंकराचार्य द्वितीय ने इसके ऊपर  
टीका-टिप्पणी की ओर इसका प्रचार किया | भ  
जिस कर्म-काण्ड का प्रचार महर्षि जैमिनी के समय में  
हुआ था उसमें आगे चलकर गड़बड़ी आ गई | स्वार्थी आचार्यो  
ने यज्ञों में पशु-बलि (कुरबानी) का रिवाज जारी कर दिया  
धर्म की आड़ लेकर वाममार्गी लोग दुराचार करने लगे यज्ञों में  
अन्त में यह रस्म यहाँ तक आगे बढ़े कि नर-मेंध यज्ञों द  
ननुष्य और गौ की बलि होने लगी ।

--- IMG\_7415.txt ---

मा,  
[ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश  
  
३२  
  
तब महाराजी ऋषभदेव जी ने इस कुरबानी के खिलाफ  
आवाज उठाई परन्तु स्वार्थी ब्राह्मण दल के सम्मुख रिवाज  
सफलता प्राप्त न हो सकी और धीरे-धीरे इसका रिवाज  
बढ़ता ही गया और अन्त में श्री गौतम बुद्ध जी इसको बन्द  
कर पाए ।  
वेदान्त-दर्शन  
ऐसे ब्राह्मणों से घृणित हो क्षव्रियों के एक दल ने  
स्वतन्व्रता अख्तंयार की, उनको ज्ञान और उपसना का पंथ  
पसन्द आया। उपासना और ज्ञान पर पुस्तकें तैयार होने  
लगीं। ज्ञान के मुख्य ग्रन्थ वेदान्त सूत्र की रचना श्री व्यासजी  
ने इसी समय में की | उपासना के वर्णन के लिये बृहदाराण्यक  
उपनिषद्‌ की रचना की गई, यहं द्वापर का अन्तिम काल था।  
अब आर्य जाति दो भागों में विभक्त हो गई । ब्राह्मण  
वर्ग जप, तप, यज्ञ इत्यादि कर्म-काण्डों को मुख्य समझते  
हुए कर्मकाण्डी व त्यागी बन गये और क्षत्रिय लोग राज-धर्म  
कहने लगे । इस प्रकार कर्वदाणल न सारे उन्नति  
ज्ञानकाण्ड का नाम “राजयोग” का नाम “हठयोग” और  
उन्हीं 'म राजयोग” हो गया ।  
  
उन्हीं दिनों श में  
आत्मा का परादुर्भाव हुआ में एक और दिव्य, शक्तिशाली  
महाराज कृष्ण ने “राजयोग” के मार्ग गम कृष्ण” थाई | इन  
उपनिषदों मार्ग का और भी संशोधन

--- IMG\_7416.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ]  
  
३३  
  
| संजय और व्यास ने इसको पसन्द कर  
प्रचार कर दिया इस तरह गीता के वर्णन किये हुए “राजयोग”  
की धूम देश देशान्तरों में फैल गई ।  
चार्वाक्‌ द  
कौरव और पाण्डवों के युद्ध ने संसार के सभी धर्मात्मा  
और ज्ञानी मनुष्यों को काल की अन्तिम निद्रा में सुला दिया  
और उस समय यह भूमण्डल ज्ञानी और फिलासफरों से  
खाली सा हो गया | अवसर पा मेढ़कों ने शिर निकाला |.  
चार्वाक नामी ब्राह्मण ने नास्तिकता का प्रचार करना आरम्भ  
कर दिया | “खाओ पियो और चैन उड़ाओ” का सिद्धान्त  
चारों ओर फैलने लगा अब हृदयों से शुभ और अशुभ कर्मों  
का भी विचार जाता रहा चारों और अन्धकार छा गया ।  
शैव, शाक्त और बौद्ध  
सदाचार पर कूठारघात होता हुआ देख कुछ लोग  
आगे बढ़े, उन्होंने शैव और शाक्त मत की नींव डाली और  
उसके चार दर्जे कायम किये | १--अघोराचार, २-वामाचार,  
३- दक्षिणाचार और ४-दिव्याचार । अघोराचार और वामाचार  
नास्तिक और कर्मकाण्डियों की रस्में लेकर शिव और शक्ति  
की अराधना करने लगे और दक्षिणाचार और दिव्याचार वाले  
  
परन्तु हिंसा और दुराचार का के  
। रसेलिये गौतम बुद्ध ने राजपाट त्याग फैले यह  
  
लिये कमर कस ली और ऐसी विजय पा ही उनकी  
यभिचारी और मांसाहारी ब्राह्मण व

--- IMG\_7417.txt ---

[ महात्मा जी की जीवनीं और उपदेश ह  
ही  
  
शरण में जाना पड़ा और बौद्ध मत का डंका पृथ्वी के इस  
  
से उस सिरे तक बज गया । क्‍  
समय परिवर्तन से उसमें भी बिगाड़ हुआ भिक्षुक और  
भिक्षुकाओं ने मर्यादा भंग कर डाली और धकिख दुराचार के  
लिये उनको किसी का डर भी नहीं रहा क्योंकि महात्मा बौद्ध  
ने केवल सदाचार पर ही कथन किया था-परमात्मा की ओर  
  
वह गये ही नहीं थे ।  
श्री शंकराचार्य जी  
  
उस समय श्री शंकराचार्य जी और गौड़पादाचार्य इत्यादि  
महान्‌ आत्माओं ने अद्दैत-वाद का खड्ग हाथ में लेकर बौद्धों  
/ का मुकाबला किया । वेदान्त-दर्शन पर श्री स्वामी शंकराचार्य  
जी ने कारिका लिखी | गीता और उपनिषदों से अद्दैतवाद  
को सिद्ध किया। परिणाम यह निकला कि बौद्ध परास्त होकर  
भारतवर्ष से निकल भागे और वेदान्त का राज हो गया।  
  
अद्वैतवाद ।  
श्री शंकरस्वामी ने बताया कि यह आत्मा ही सत्य है ।  
शुद्ध, बुद्ध, नित्य और मुक्त है इसमें कभी विकार नहीं आता  
यह जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है वह सब भ्रम है | द सदाचार  
  
और चिन्तन से यह भ्रम दूर हो सकता है | एक ही आत्मा  
अनेक रूप धारण कर प्रत्य >४१ हे 3  
  
में क्ष भास रहा है जैसा कि उपनिषदों  
में आया है | गास रहा है कि उर्पन्

--- IMG\_7418.txt ---

पहात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] ३५  
  
अर्थात- जैसे प्रकाश काँच के भीतर प्रवेश होकर उसी  
के रंग के अनुसार अपना रंग प्रगट करता है उसी प्रकार  
आत्मा प्रत्येक वस्तु में व्यापक होकर अलग-अलग भास रही  
है | यह आत्मा ही अजर अमर अविनाशी परब्रह्म है, जब तक  
इसका ज्ञान नहीं हो जाता तक तक मुक्ति नहीं होती | यह  
ही सत्य है और इसके अतिरिक्त सब असत्य माया जाल हैं।  
  
शंकरस्वामी ने यह भी कहा कि इसकी प्राप्ति संन्यास  
धारण किये बिना अर्थात्‌ निवृत्ति मार्ग में प्रवेश हुए बिना  
असम्भव है, त्याग और वैराग्य तथा विचार ही इस प्रकार के  
साधन हैं कि जिनसे आत्म-साक्षात्कार होता है । प्रवृत्ति तथा  
  
गृहस्थी में रहने वालों को दुर्लभ है यह श्री शंकर जी को मत  
था । 5  
  
आगे चलकर मायावाद, ब्रह्मवाद, प्रमाणवाद, मिथ्यावाद,  
निवृत्तिवाद इत्यादि इसकी बहुत सी शाखायें बन गयीं परन्तु  
सब थक गये और अन्त में अनरुचि और अनिर्वचनीय कहानी  
कह कर छोड़ दिया क्योंकि जिन ' 'अहं ब्रह्मास्मि” 'और  
“तत्वमसि“ इत्यादि वाक्‍्यों का आधार लेकर अब्वैतवादी चलते  
हैं यह ही अन्तिम पद नहीं है सत्‌ पद अभी इससे बहुत दूर.  
है यह तो बीच की अवस्थाएँ हैं इसलिये इनको ही वैदान्त  
  
आखिरी ज्ञान) कहना भूल है । रे  
सोचिये ! वेदान्ती कहते हैं “जगत मिथ्या है अच्छा हम

--- IMG\_7419.txt ---

की जीवनी और उपदेश  
  
। महांत्मी जी  
  
दिखाना चाहता है। जहाँ दो.  
को जानना कैसे. सम्भव है। यह  
हम तुम रोज वरत रहे हैं,  
कि अनित्य माया का भ्रम है। है नहीं  
कोई पूछे कि माया क्या है ? तो कहते हैं  
के लड़के और मृग वृष्णावत्‌ झूठी है।  
असकहे कि यूठी वस्तु को साबित करने को यह  
का दृष्टान्त देना कहाँ तक ठीक है तब चुप हा जात ह |  
यदि कोई पूछता है कि जगत्‌ भासता किसको है ब्रह्म  
को अथवा किसी दूसरे को ? तब उत्तर न देकर 'अनिर्वचनीय'  
कह देते हैं और चुप हो जाते हैं ।  
ऐसा क्‍यों है ?  
वास्तव में वेदान्त के समझने के लिये अनुभव की  
निश्चयाि का हे यह स्थूल बुद्धि से समझ में नहीं आता।|  
है। भ्रम का जो पर्दा बीब में बुद्धि से इसका पता मिलता  
कर्म और उपासना के पश्चात बा याहै वह साधन से कटता  
गपोड़े [ इन बातों की खबर मिलती  
जैसे कि बौद्ध शब्यऊ हों हो सकता |  
  
और बकवादी हो रहे ।. थे वैसे ही यह भी मिथ्यावाद |

--- IMG\_7420.txt ---

की जीवनी और उपदेश ] २७  
  
महात्मा जी  
  
धोडा-सा मतभेद करके अद्दैत को विशिष्टाद्वैत का नाम  
दिया | यह कहते नया ठीक है परन्तु उसके दो भेद हैं।  
वैतन्‍्य और जड़ | यदि माया उसके भीतर क्‍  
वे 2 न होती तो निकल  
मटर में दो दाने अलग-अलग रहते हैं परन्तु,  
से बाहर आने के पूर्व दोनों एक ही नाम और रूप लिये हु  
थे इसी प्रकार ब्रह्म एक था आगे चलकर पुरुष और प्रकृति  
दो हो गये और इन्ही संसार में दो. वस्तुयें हैं | १- चित्त और :  
२- अचित्त | इनके द्वारा ही संसार का सृजन हुआ है। इस  
अवस्था को उपासना के द्वारा मनुष्य प्राप्त कर सकता है कि  
जिसके लिये त्याग व संन्यास की आवश्यकता नहीं है। भक्ति  
पथ पर जिज्ञासु गृहस्थी में रहता हुआ भी. चल सकता है ।  
श्री शंकर-स्वामी का मत त्यांग और ज्ञान का मार्ग  
था| श्री रामानुज ने उपासना व शक्ति का बीज बोया और  
त्याग का निषेध किया । रा  
मध्वाचार्य जी इत्यादि  
  
श्री रामानुजाचार्य जी महाराज. के पश्चात्‌ इसी भक्ति क्‍  
जी और श्री.बल्लभचार्य  
  
मार्ग में श्री मध्वाचार्य जी, श्री निम्बाचार्य जी <  
जी हुए जिन्होंने समयानुसार प्राचीन सिद्धान्तों में थोड़ा बहुत  
परिवर्तन करके द्वैत, अद्वैत और द्वैताद्वैत सिद्धान्तों से वैष्णव  
सम्प्रदाय को और भी दृढ़ किया | ः.  
श्री रामानन्द जी और कबीर  
  
जब वैष्णव धर्म में संकीर्णता आ गई ।  
ब्राह्मण अब्राह्मण का प्रश्न उनके  
  
८27  
हा अं \*  
5७  
  
बीर साहब  
छत-छात और  
  
के यहाँ उठ खड़ा हुआ तथा  
  
है

--- IMG\_7421.txt ---

३८ [ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश  
  
परमात्मा की स्थूल मूर्ति तथा गौ-लोक से आगे जाने का  
विचार ही उन्होंने त्याग दिया और वहीं अड़के रह गये तंब  
काशी में श्री रामानन्द जी प्रकट हुए | यह रामानुज सम्प्रदाय  
के एक उच्चकोटि के त्यागी साधु थे, मा नाम इनका इृष्ट  
था परन्तु इनके “राम” अन्य वैष्णवों की भाँति स्थूल नहीं थे  
वरन्‌ सर्व व्यापक चैतन्य-सत्ता को वह राम कहते थे |  
इन्होंने जाति पाँति का ख्याल छोड़कर इस प्रसाद के लिये  
मनुष्य मात्र को न्योता दिया और उनको अधिकारी समझा |  
श्री कबीर साहब, श्री रैदास जी, सदन कसाई, गणिका वैश्या  
सैना नाई, धन्‍ना जाट इत्यादि सब इनके मुख्य-मुख्य शिष्य  
थे | जिन्होंने इनके पश्चात्‌ अपनी-अपनी अलग-अलग  
शाखायें बना कर इनके सिद्धान्त का खूब ही प्रचारें किया |  
श्री कबीर साहब और सनन्‍्त-मत  
श्री कबीर साहब का दर्जा इन सबसे ऊँचा था और  
लोग तो सिद्धान्तों में मतभेद होने पर भी वैष्णव सम्प्रदाय को.  
नहीं छोड़ सके। परन्तु इन्होंने १-- सत्‌ नाम, २- सत्त-संग,  
\* भत्त गुरु की त्रिपुटी बना कि नये मार्ग की नींव डाली कि  
द गुरु के आश्रय रहकर सत्संग  
  
उसमें और परमात्मा में भेद नहीं |

--- IMG\_7422.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ]  
  
३६  
समझते और इसी का आश्रय रखकर उन्नति करते  
और कृष्ण को अवतार मानते हैं परन्तु इनके इष्ट नहा  
आईडियल माया से परे की वस्तु है जिसका कोई भी नाम  
रख लिया जाय ।  
  
वह कहते हैं-  
  
एक राम दशरथ घर डोले, एक राम घटघट में बोले ।  
एक राम का सकल पसारा, एक राम व्रिगुण से न्यारा ।।  
फिर कहते हैं- ह  
एक राम दशरथ घर डोले, निराकार घट-घट में बोले ।  
बिन्दुराम का सकल पसारा, निरालम्ब सबसे ही न्‍्यारा ।।  
वैष्णों के लिये कहा- रा  
तीन लोक को सब कोई धावै, चौथे देव का मर्म न पावै |  
चौथा छोड़ पंचम पद लावै, कहें कबीर हंमरे ढिंग आवै ।।  
तीन गुनन की भक्ति में भूल रहा संसार।  
कहें कबीर “सत्‌” नाम बिनु कैसे उतरै पार।। हा  
वास्तव में जो माया के परे है वही असली राम हे  
7क पहुँचना आदर्श है यही पंचम-पद है इसका जान से  
णै पंचम विद्या है | जो शब्द सृष्टि में उत्पत्ति ही हैं । जो क्‍  
“कट होकर व्यापक हो रहा है जिसको प्रणव क है।  
यात्मक शब्द कहलाता है यही उनका सत्‌ नाम  
  
पश्चात्‌ सन्त-मत में भी बहुत सी  
मं श्री कबीर साहब के पश्चात्‌ सन्त-मत में इत्यादि |  
“पं हो गई जैसे नानकपन्थी, दादूपन्थी 'राधास्वामी इत्ा

--- IMG\_7423.txt ---

हि कट  
  
शैली वही हः  
सबसे थोड़ा-थोड़ा सी मत-भेद है शेष शै करके हैं पर\*  
दा ै प्रकार बहुत से फिरके ह पर 5  
  
मुसलमानों में भर आसान  
  
मुसलमानों में है ३ ललिफसानी का तरीका आसान  
  
उन सबसे ह० मुजहिंद ही जिज्ञासु को अन्तिम-पद कु  
वह सरल साधनों के द्वारा ऊँची है |”  
उनकी तहकीकात भी सबसे ऊँ -  
  
ओर ले जाते हैं उनकी त तात्पर्य यह है  
सब बातों को लिखने से हमारा तात्पर्य यह है.  
  
इन सब बातों विचार करते रहने से ही का  
खाली पुस्तकों के पढ़ने अथवा विचार कर रह कह  
नहीं चल सकता जब तक कि जीवन साधन सम्पन्न कु  
अमली (छब्लांथ्थ) न हो । जिसकी : है.  
सब लोग उधर ही की ओर जा रहे हैं जिसकी पहुयु  
  
जहाँ तक हो गई है जो-जिस स्थान तक जा सका है, उर  
पर उसने कथन किया है, अब आगे चलेगा तब और खबर  
होगी इसमें लड़ाई झगड़े की जरूरत नहीं है | इसी -प्रकांज  
साधन भी हजारों और लाखों हैं जिस साधन से जिसको लाभ  
'हुचा है वही उसने दूसरे को बताया इस प्रकार एक ही माग  
के चलने वाले जब बहुत से हो :  
पड़ गरफ़। ऐसे ही सारे मजहब

--- IMG\_7424.txt ---

हि जी की जीवनी और उपदेश  
  
नाम “योग” है और  
  
हें ।  
इस धार्मिक-इतिहास पर दृष्टि डालने से पता चलता  
है कि जिस प्रकार साइन्स में नये-नये आविष्कार दिन-प्रतिदिन  
होते चले जा रहे हैं उसी प्रकार अध्यात्म-विद्या भी आदि  
काल से इस समय तक बहुत उन्नति कर गई है | ईश्वर की  
प्रेरणा से समय-समय पर रिफारमर्स (१४07॥०७5) उत्पन्न  
  
| होते आये हैं और उन्होंने उस समय की स्थिति तथा देश-काल  
8 और वस्तु पर विचार करते हुए प्राचीन प्रणाली में थोड़ा हि  
य हेर-फेर करके उसकी ब्रुटियों को दूर किया है | इस  
  
हा चलेगा | परन्तु भूल केवल यह है  
  
और न जाने ताने' कब तक  
यह सिलसिला चला आ रहा है और न जाने  
  
बी तहकीकात को ही अन्तिम ठहरा जाते  
है जिज्ञासु विचारे भ्रम में पड़ ः  
  
हैं अपनी अपनी शैली की प्रशंसा  
  
सा के पुल बांघता  
  
अमन्‍क-+  
लड़ाई  
  
की रहा है और इन्हीं बातों से आप मे होते हैं. जिनकी  
शिर्आ जाती है । जो तरीके  
  
कर मयानसार होती ऐै,  
  
आफ न कछ  
  
हुए  
या  
दा  
५ +  
पा  
]  
  
६ '  
  
५  
हु  
हु  
  
परन्तु लोगों को भजन-पूजन

--- IMG\_7425.txt ---

४२  
  
और न  
वर्ष हो गये न अभी स्वर बदला 3 कि तुम्हारा  
शान्ति आई तो कहा जी सकता कोई न कोई व  
वर्तमान युग के लिये ठीक नहीं है । इसमें कोइ न -  
अवश्य है |  
  
यह जीवात्मा तीन शरीरों में बद्ध है | स्थूल, सूक्ष्म  
कारण | इनको ही प्राण, मन और बुद्धि कहते हैं। यह ः  
शरीर पंचभौतिक है प्राण इसमें व्यापक है | सूक्ष्म हैं  
मनोमय-कोश कहलाता है और कारण-शरीर बुद्धि वा महदुते,  
और जो अहंकार का आवरण है, यह ज्ञान और आनन्द  
गिलाफ है । इन तीनों प्रकार के पर्दे हटाने के लियें  
साधन बताये हैं । स्थूल पर्दा कर्म वा हठ से  
  
4.2 पड  
  
सूक्ष्म के हटाने के लिये उपासना-हथियार है और कार  
  
लिये विचार है | जिस तरह शरीर में यह तीनों मिलेर  
  
उसी तरह जब तक सफलता शीघ्र नहीं  
उपासना वा भक्ति भी हो और विवेक साथ का  
  
कभी साथ--साथ ह] है.  
टीक हो सकता है । पंथाइयॉ सो  
  
से श्रेष्ठ दूसरा मार्ग  
करते रहना चाहिये इसी तर ;ं  
  
साधन आजकल के लिये

--- IMG\_7426.txt ---

| जी की जीवनी और उपदेश ] ४३  
  
गई हैं परिश्रम करने को बल नहीं रहा | फुरसत का यह  
हाल है कि दिन रात पिसने पर भी पेट भरने के लिये रोटी :  
नहीं मिलती और मानसिक-शक्तियाँ (हिम्मत) निर्बल पड़ गई  
हैं, कठिन और अधिक समय लेने वाले साधनों का जमाना  
नहीं रहा | अब आवश्य्रकता है इस बात की कि कोई ऐसा  
सरल और लाभदायक उपाय हो कि जिससे-बिना परिश्रम  
के थोड़े ही काल में कार्य सिद्ध हो सके | यह विचार सामने  
रखते हुए यह एक नवीन-प्रणाली योग विद्याकी प्रचलित की  
है कि जिसकी शिक्षा आप सब लोग पा रहे हैं, उसके लाभ  
आप सबसे छिपे नहीं होंगे, जिन अवस्थाओं को बड़े-बड़े  
  
कठिन उपाय करने वाले भी वर्षों में नहीं प्राप्त कर पाते वह  
आप लोगों को उस्र मालिक की दया से सहज में ही प्राप्त हो.  
रही हैं | अभी समय है कि तुम लगलिपट कर इस विद्या:  
को सीख लो और दूसरों में भी इसका प्रचार करो, न जाने  
आगे क्‍या हो । परमात्मा तुम सबकी सहायता करें |. -  
  
ओश्म्‌ शम्‌ पा रे